ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मीडिया का भारतीयकरण जरूरी है : प्रो संजय द्विवेदी

हिंदी विश्वविद्यालय में 'संचार और भारतीयता' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्धा, 20 सितंबर 2024 : मीडिया का भारतीयकरण जरूरी है। भारत का भारत बने रहना ही सबसे बड़ी चुनौती है, आने वाले दिनों में हम विश्व की प्रथम अर्थव्यवस्था हो जाएं परंतु हमारा लक्ष्य कभी भी अमेरिका बनना नहीं होना चाहिए। उक्त वक्तव्य भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने किया।

प्रो. संजय द्विवेदी महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग द्वारा 'संचार और भारतीयता' विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने की। विशिष्ठ वक्ता के रूप में माखनलाल चर्तुर्वेदी पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के प्रो. पवित्र श्रीवास्तव उपस्थित थे। विषय प्रवर्तन व स्वागत वक्तव्य जनसंचार विभाग के अध्यक्ष और कार्यक्रम के संयोजक प्रो. कृपाशंकर चौबे ने किया।

प्रो. संजय द्विवेदी ने वर्धा धरती के अनुपम सौंदर्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि गांधी ने भारत को करीब से जाना और समझा और आज के समय में हमें भी आवश्यकता है कि हम भारत के निकट जाएं और उसे समझें। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि

ज्ञान ही हमारी परंपरा के केंद्र में है। उन्होंने कहा कि हिंदी विश्वविद्यालय का ध्येय ज्ञान, शांति, मैत्री ही असल में भारतीय ज्ञान परंपरा को परिभाषित करता हैं। उन्होंने आगे कहा कि हमारा परिवार ही भारतीयता को जानने -समझने की प्रथम पाठशाला है। हमारी ज्ञान परंपरा में प्रश्न बाधित नहीं किए जाते, बल्कि हमेशा खुला संवाद स्थापित किया जाता रहा है। भारतीयता, आध्यात्मिकता और भौतिकता के बीच कभी द्वंद्व नहीं रहा। हमारे चारों पुरुषार्थ जोड़ने और मुक्त करके वाली परंपरा का बोध कराते हैं। हमारी संस्कृति दिल जोड़ने की संस्कृति रही है। मैत्री हमारा स्वभाव रहा है। उन्होंने मनुष्यता के वर्तमान रूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के समय में मनुष्यता के सामने कई बड़े संकट खड़े हो रहे हैं। अनुभवों की कसौटी पर खरा उतरने वाला ही असली ज्ञान होता है। वर्तमान मीडिया के संदर्भ में बात करते हुए प्रो. द्विवेदी ने कहा कि आज आवश्यकता है कि हम अपने समाज का आध्यात्मीकरण करें। अपने पत्रकारिता के सुनहरे दौर की बात करते हुए उन्होंने प्रभाष जोशी और राजेंद्र माथुर की पत्रकारिता पर भी प्रकाश डाला। हिंदी भाषा और हिंदी में हो रही पत्रकारिता पर अपने विचार रखते हुए उन्होंने यह भी कहा कि आज के समय में हिंदी को लचीला और सुगम बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी भाषी प्रदेशों में कितने घरों में हिंदी के शब्दकोश पाए जाते हैं? एक कन्नड़ भाषी जब हिंदी सीख सकता है तो हम क्यों उसकी भाषा नहीं सीखना चाहते हैं? ऐसे कई प्रश्नों से उन्होंने वर्तमान समय में हिंदी की स्थिति पर चिंता व्यक्त की। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि संकट अंग्रेजी

से नहीं बल्कि अंग्रेजियत से है। अंग्रेजियत ने हमें अपनी उंगली से घृणा करना सिखाया। भारतीयता किसी औपचारिकता में विश्वास नहीं करती। अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए प्रो. पवित्र श्रीवास्तव ने संचार और भारतीयता को समझाने के लिए कुछ आंकड़ों को प्रस्तुत किया, जिसे

उन्होंने बारहवीं पास विद्यार्थियों से एकत्र किया था। उन्होंने संचार और भारतीयता से जुड़े सवालों के माध्यम से जानने की कोशिश की कि हमारी युवा पीढ़ी भारतीयता को किस रूप में जानती और समझती है। उनके प्रश्नों में कुछ ऐसे सवाल थे जिनके माध्यम से उन्होंने एक आंकड़ा एकत्र किया और जानने की कोशिश की कि संचार और भारतीयता को आमतौर पर लोग कैसे समझ रहे हैं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में पधारे प्रो. संजय द्विवेदी पर एकाग्र पुस्तक 'लोगों का काम है कहना' का लोकार्पण भी किया गया। इस पुस्तक का संपादन डॉ. लोकेंद्र सिंह ने किया है। पुस्तक की भूमिका हिंदी विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो.कृपाशंकर चौबे ने लिखी है। कार्यक्रम का संचालन जनसंचार विभाग के एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. राजेश लेहकपुरे ने किया एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. रेणु सिंह ने आभार माना। इस अवसर पर अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।